जैन धर्म

⇒ जैन धर्म विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से एक है।

⇒ जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्द से बना है। जिसका अर्थ विजेता होता है। अर्थात जीसने अपने मन, वाणी एंव काया (शरीर) को जीत लिया हो।

⇒ जैन धर्म के मान्यतानुसार यह एक शाश्वत धर्म है।

⇒ जैन अनुश्रुतियों और परम्पराओं के अनुसार जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए।

Note:- जैन धर्म के संस्थापक → ऋषभदेव या आदिनाथ

ऋग्वेद में ऋषभदेव व अरिष्टनेमि का उल्लेख।

ध्यान दें:- 24 तीर्थंकर में से 22 तीर्थंकर के बारे में कोई खास जानकारी नहीं मिलती है।

23वें तीर्थंकर → पार्श्वनाथ

⇒ महावीर स्वामी के जन्म से 250 वर्ष पहले।

⇒ पिता → अश्वसेन (काशी के राजा)

⇒ माता → वामादेवी (कौशस्थल के राजा नरवर्मन की पुत्री

⇒ पत्नी → प्रभावती

⇒ जन्मस्थल → वाराणसी, प्रतीक चिन्ह सर्प, वृक्ष → धतकी

निर्वाणस्थल सम्मेद शिखर

Note:- सम्मेद शिखर झारखण्ड के सर्वोच्च चोटी है पारसनाथ पहाड़ी।

⇒ गृह त्याग कर संन्यासी बने और घुम-घुमकर अपने उपदेशों का प्रचार किया। (लगभग 70 वर्ष)

⇒ पार्श्वनाथ के अनुयायी → निर्ग्रंथ

⇒ इन्होने 83 दिन की घोर तपस्या के बाद ज्ञान प्राप्त हुआ

⇒ इन्होने वैदिक धर्म के कर्मकाण्ड तथा देववाद के कड़ा आलोचक थे।

⇒ जाति-प्रथा पर कड़ी प्रहार किया। प्रत्येक को ये मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी मानते थे। चाहे वह किसी भी जाति का हो।

Scanned with CamScanner

पार्श्वनाथ की मूल शिक्षा :-

=> हिंसा न करना, सदा सत्य बोलना, चोरी न करना, संपत्ति न रखना, (अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय)

ध्यान दे :-
महावीर के माता-पिता भी पार्श्वनाथ के अनुयायी थे।

=> पार्श्वनाथ ने नारियों को भी अपने धर्म में प्रवेश दिया
स्त्री संघ की अध्यक्षता → पुष्पचूला का उल्लेख।

=> पार्श्वनाथ के प्रथम अनुयायी → उन्हीं के माता 'वामा' और पुत्री प्रभावती थी

=> जैन धर्म के अंतिम व 24वाँ तीर्थंकर महावीर स्वामी हुए।

वर्द्धमान महावीर को जैन धर्म का वास्तवीक संस्थापक

=> वायु पुराण तथा भागवत पुराण में ऋषभदेव को विष्णु या नारायण का अवतार कहा गया है।

=> ऋग्वेद एवं गोपथ ब्राह्मण में स्वयंभू कश्यप' का उल्लेख जिससे पता चलता है कि ऋषभदेव ही थे।

=>

Note :- जैन मुनियों ने प्राकृत भाषा का प्रयोग किया तथा जैन साहित्य अर्द्ध-मागधी में लिखे गए।

Scanned with CamScanner

वर्द्धमान महावीर

=> महावीर का जन्म 540 BC वैशाली के कुण्डग्राम में हुआ था
=> इनके पिता सिद्धार्थ ज्ञातृक कुल के गणराजा थे।
=> उनकी माता त्रिशला जो लिच्छवि-गणराज्य के प्रधान चेटक की पुत्री थी।
=> बचपन का नाम वर्द्धमान था। महावीर का विवाह कौण्डिन्य गोत्र की कन्या यशोदा से हुआ। इन्ही के गर्भ से
=> प्रियदर्शना या अणोज्जा नामक पुत्री का जन्म हुआ।

=> वर्द्धमान के जन्म के अवसर पर देवताओं ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक आगे चलकर एक चक्रवर्ती राजा या तो ज्ञानी साधु बनेगा।

रोचक तथ्य : जैन परम्परा के अनुसार, वर्धमान पहले ऋषभदत्त नामक ब्राह्मण की पत्नी देवानंदा के गर्भ में आए। परन्तु अभी तक सारे जैन तीर्थंकर क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुए थे, इसलिए इन्द्र ने वर्धमान को देवानंदा के गर्भ से हटाकर त्रिशला के गर्भ में स्थापित कर दिया।

=> स्वाभाविक रूप से वर्धमान का प्रारम्भिक जीवन सुख-सुविधा-पूर्ण था।
=> राजकुमार होने के कारण अनेक विद्याओं एवं कलाओं की शिक्षा दी गई।
=> विवाह → वर्द्धमान को यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ यशोदा से प्रियदर्शना नाम की पुत्री उत्पन्न हुआ।
=> इतना होने के बाद भी वर्द्धमान का चिन्तनशील स्वभाव शांत न हुआ।
=> 30 वर्ष के अवस्था में इनके पिता का देहान्त हो गया
=> वर्द्धमान का बड़ा भाई नंदिवर्धन राजकाज को काम सम्भाला।

Scanned with CamScanner

=> 30 वर्ष के अवस्था अपने बड़े भाई से आज्ञा लेकर घर त्याग दिया। और निर्ग्रंथ भिक्षु का जीवन धारण कर लिया।

=> 13 माह बाद वह निःवस्त्र रहना प्रारम्भ किया। भोजन भी हाथ पर ग्रहण करने लगा।

=> 12 वर्षों तक शरीर की चिन्ता न करते हुए कठोर तपस्या की। इस दौरान उन्हे मार एवं गालियाँ भी खानी पड़ी लोगो का उपहास सहना पड़ा। फिर भी अपने पथ से विचलित नहीं हुए।

=> इस कठिन तपस्या के बाद (जृम्भिका ग्राम) के निकट ऋजुपालिका नदी के तट पर शालवृक्ष के नीचे (श्यामक गृहपति के खेत) 13वें वर्ष बाद 42 वर्ष की अवस्था में कैवल्य की प्राप्ति हुई।

Note :- अब केवलिन (सर्वज्ञ) कहलाए

* अर्हत (योग्य), निर्ग्रंथ (बंधनरहित), जिन (विजेता) महावीर (इन्द्रियों पर विजय) कहलाया।

=> ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर अपने विचारों के प्रचार के लिए निकल पड़े।

=> चंपा, वैशाली, राजगृह आदि नगरों में बरसात के माह छोड़कर बाकी मौसम में घूम घूम कर धर्म का प्रचार किया।

=> शीघ्र ही महावीर के अनुयायियों, जो जैन कहलाते थे, की संख्या बहुत बड़ी हो गई। अनेक विरोध के बावजूद भी महावीर की लोकप्रियता बढ़ती गई।

=> एक दिन राजा हस्तिपाल के यहाँ सुवर्णवालुका नदी के किनारे कुमारगाँव (पावापुरी) में महावीर की 72 वर्ष की अवस्था में मृत्यु ( ) हो गई।

Scanned with CamScanner

जैन धर्म का प्रचार प्रसार

=> दिगम्बर के मतानुसार → महावीर का प्रथम उपदेश राजगृह के विपुलाचल पर्वत, बराकर नदी के तटपर हुआ।

=> प्रथम शिष्य जमाली (इन्हीं का दामाद) थे।

=> प्रथम शिष्या अंगराज दधिवाहन एवं रानी पद्मावती की पुत्री चन्दना थी।

Note :- महावीर के कैवल्य के 12 वें वर्ष में जमाली ने विरोध किया था।
और एक नए सम्प्रदाय बहुरतवाद को चलाया
(ii) ठीक उसके दो वर्ष बाद तिस्सगुप्त ने भी विरोध किया था।

=> ध्यान दें : राजवंश का संरक्षण जैन धर्म के प्रचार-प्रसार का मुख्य कारण था।

=> इसके मामा चेटक महावीर का भक्त था।

=> अवन्ति का राजा चण्डप्रोत तथा उनकी 8 रानियाँ भी महावीर के भक्त थे।

=> उत्तराध्ययनसूत्र → सेणिय (बिम्बिसार) तथा उसकी रानियां जैन धर्म के प्रवर्तक थी।

=> कौशाम्बी नरेश की रानी मृगावती तथा सिन्धु सौवीर के राजा उदयन भी जैन धर्म को मानता था।

=> चन्द्रगुप्त मौर्य भी जैन धर्म का समर्थक था। अपने जीवन के अंतिम समय में जैन परम्परा के अनुसार कर्नाटक के स्वर्णवेलगोला में प्राण को त्याग दिया।

=> इन्हीं के शासन काल में 12 वर्षों का मगध में अकाल पड़ा भी उस समय जैन धर्म दो भागों में बट गया
श्वेताम्बर, दिगम्बर

=> अशोक का पौत्र सम्प्रति भी जैन समर्थक था।
↳ श्वेताम्बर मतावलम्बी था।

Scanned with CamScanner

=> खारवेल को जैन धर्म का महान संरक्षक था। इन्होने खण्डगिरि - उदयगिरि की पहाड़ियों पर जैन धर्म को गुफाएँ प्रदान की।

Note:- हाथीगुम्फा अभिलेख दावा करता है कि खारवेल ने मगध से जिन की मूर्ति वापस लाया जिसे मगध का नन्द शासक महापद्मनन्द ले गया था।

जैन मत एवं दर्शन

=> यह एक नास्तिक मत है।

=> जैन धर्म में संसार दुःखमूलक है। मनुष्य जरा (बुढ़ापा) तथा मृत्यु से ग्रस्त है।

=> व्यक्ति को सांसारिक जीवन की तृष्णाएं घेरे रहती है।

=> संपत्ति संचय के चलते मनुष्य की कामना रूपी पिपासा बढ़ती है।

=> संसार - त्याग तथा संन्यास ही व्यक्ति को सच्चे सुख की ओर ले जा सकता है।

=> जैन धर्म के अनुसार सृष्टिकर्ता ईश्वर नहीं है।

=> सभी प्राणी अपने - अपने संचित कर्मों के अनुसार विभिन्न योनियों में उत्पन्न होते है और कर्म-फल भोगते है। कर्मफल ही जन्म तथा मृत्यु का कारण है।

=> ध्यान दे :- जैन धर्म ईश्वर के अस्तित्व को मानता है लेकिन ईश्वर के स्थान को जिन से नीचे मानता है।

Note :- सांसारिक तृष्णा - बंधन से मुक्ति को निर्वाण कहा गया। और यह निर्वाण कर्मफल से छुटकारा पाकर ही व्यक्ति निर्वाण की ओर अग्रसर हो सकता है।

Scanned with CamScanner